This volume of
JÑĀNĀBHA
is being dedicated to honour
Professor J.N. Kapur
on his 70th Birthday

PROFESSOR JAGAT NARAIN KAPUR

Born : September 7, 1923

Felicitation on his 70th Birthday : September 7, 1993

Jñānābha, Vol 24, 1994
(Dedicated to Professor J.N. Kapur on his 70th Birthday)

मनीषी, गणित गणपति, उदारमना
देवपुरुष डा० कपूर का अभिनन्दन

डा०बी०बी०लाल (डी. लिट्)
अवकाश प्राप्त प्राचार्य दयानन्द वैदिक महाविद्यालय, उरई
तथा
भू०पू० कुलपति बुन्देलखण्ड वि०वि० झाँसी
की ओर से अभिनन्दन

– 'ज्ञानाभ' परिवार के संरक्षक एवं 'ज्ञानाभ' का श्रीगणेश कराने के लिए प्रेरक भूमिका का निर्वाह करते हुए, मुझे, प्रस्तोता के रूप में सेवा का एवं इस शोध पत्रिका से संबद्ध होने का सौभाग्य मिला । 'ज्ञानाभ' की विश्वयात्रा की उपलब्धि की पृष्ठभूमि में श्रद्धेय महामना डा० कपूर का प्रशंस्य योग रहा जिसके लिए उनके प्रति 'ज्ञानाभ' परिवार के साथ मैं भी नतमस्तक एवं कृतार्थ होकर अपनी विनम्र कृतज्ञता सादर ज्ञापित करता हूँ ।

– विश्व धर्म सम्मेलन में शिकागो में महर्षि विवेकानन्द को बोलने के लिए 'शून्य' प्रस्तावित किया गया । 'शून्य', गणित का शून्य जो ब्रह्म विद्या, राजयोग और आत्म दर्शन की भी व्याख्या करता है, यह व्यवस्था भारत के प्रतिनिधि ने ही दी । इसी संदर्भ में मैंने डा० कपूर को 'मनीषी' एवं 'देवपुरुष' कहने का साहस किया है ।

– गणित एकाग्रता का ही पर्याय है तथा एकाग्रता समस्त योग और ब्रह्मविद्या की आधार शिला है । मेरी ऐसी मान्यता है कि गणितज्ञ अपने अध्ययन अनुशीलन विषय 'गणित' के ही कारण योगी की कोटि में आ जाता है । सारस्वत डा० कपूर एक 'गणितज्ञ' हैं, गणित पुरुष हैं तथा राजयोगी हैं, ब्रह्मविद् हैं । उनका अभिनन्दन भारतीय मनीषा का अभिनन्दन है, भारतीय दर्शन का अभिवादन है, भारतीय आत्मा के प्रति विनम्र नमन है ।

– हमारी कामना और परमपिता परमात्मा से हार्दिक प्रार्थना है कि यशस्वी डा० कपूर शतायु हों, स्वस्थ एवं प्रसन्न रहें । नयी पीढ़ी अपनी विकासोन्मुख दिशा में उनसे प्रेरणा प्राप्त करे, उनके, आशीर्वाद से अग्रसर हों तथा उनकी भावस्वरूपा छबि में उनकी उल्लेख्य ऊँचाइयों को प्राप्त करे ।

एवमस्तु ! एवमस्तु !! एवमस्तु !!!